E-Learning Study Material
By - Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR
B.A. Economics Hons. First year
First Paper

Gross Interest and Net Interest

Q. कुल ब्याज और शुद्ध ब्याज या वास्तविक ब्याज में अन्तर स्पष्ट करें।

Important definition of Interest :-

(i) Interest is the price paid for the use of Loanable Funds. Loanable Funds may be used either for the purchase of the consumer goods or as capital in the process of production. It is with the latter use that we are chiefly concerned (in economics) — By Meyers. A. L.

(ii) Interest may be defined as the Payment made by the borrower of Capital, by virtue of its productivity, as a reward for his (capitalist) abstinence.
— By Wicksell. K. K.

(iii) Interest is a reward for parting with the liquidity for a specific period.
By — J. M. Keynes

Scanned with CamScanner

Gross Interest and NET Interest

कुल ब्याज (Gross Interest) -

सामान्यतया, एक पूंजीपति को पूँजी के उधार से जो कुछ आय प्राप्त होती है उसे कुल ब्याज कहा जाता है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री चैपमैन (Chapman) के अनुसार, "कुल ब्याज में पूँजी को उधार देने के लिए किया गया भुगतान, जोखिम (व्यक्तिगत तथा व्यवसायिक जोखिम) उठाने के लिए किया गया भुगतान, विनियोग में लगाने की असुविधा के लिए किया गया भुगतान, तथा विनियोग की देख रेख के कार्य तथा उसके विषय में चिन्ता करने के लिए किया गया भुगतान सम्मिलित रहते हैं।"

(Gross Interest includes payment for the Loan of Capital payment to cover risk of Loss. Which may be (a) Personal Risk (b) Business Risk, payment for the inconveniences of the investment and Payment for the work and worry involved in watching investments calling them in and investing.)

कुल ब्याज के अंग -

वास्तविक ब्याज कुल ब्याज का एक अंग है। कुल ब्याज के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं -

Scanned with CamScanner

(1) वास्तविक ब्याज (Net Interest) - जो रकम केवल पूँजी के उपयोग के बदले में दी जाती है उसे वास्तविक ब्याज कहा जाता है।

चैपमैन (Chapman) के शब्दों में, "वास्तविक ब्याज वह ब्याज है जो कि पूँजी के उपयोग के बदले में दिया जाता है जबकि पूँजी को देने में कोई जोखिम, कोई असुविधा तथा इसकी वसूली में कोई झंझट नहीं करना पड़ता है। इस भुगतान को शुद्ध ब्याज, वास्तविक ब्याज अथवा आर्थिक ब्याज कहा जाता है।

(Net interest is payment for the loan of capital, when no risk, no inconvenience (apart from that involved in saving) and no work entailed on the lender.)

इस सम्बन्ध में मार्शल (Marshall) का कहना है कि - "ब्याज जिसे हम केवल पूँजी की आप अथवा इन्तजार करने का पारितोषिक कहते हैं वह वास्तविक ब्याज है।"

(The interest of which we speak when we say that interest is the earnings of capital simply or simply the reward of waiting is net interest.)

Scanned with CamScanner

(2) जोखिम का प्रतिफल - पूँजीपति को उधार देते के क्रम में जोखिम उठाने के बदले में उसे जो प्रतिफल मिलता है उसे कुल ब्याज में जोड़ा जाता है। मार्शल ने इस प्रकार के जोखिम को निम्नांकित दो भागों में बाँटा है -

(a) व्यवसायिक जोखिम (Trade Risk or, Professional Risk) - एक पूँजीपति को किसी व्यापारी को ऋण देते समय इस बात की आशंका रहती है कि यदि भविष्य में व्यापारी को हानि होगयी, तो पूँजीपति को ब्याज मिलना तो दूर रहा मूलधन का भी भुगतान नहीं मिल पायेगा।

(b) व्यक्तिगत जोखिम (Personal Risk) - व्यक्तिगत जोखिम ऋणी के अविश्वास के कारण उत्पन्न होता है। पूँजीपति को हमेशा यह डर रहता है कि कहीं ऋणी बेइमानी करके अथवा किसी असमर्थता के कारण ऋण को वापस ही न करे अथवा उसमें ऋण वापस करने की क्षमता ही न रहे।

उपयुक्त दोनों जोखिमों के कारण पूँजीपति ब्याज माँगता है।

इसके अलावे पूँजीपति को ऋण के लेन देन में अनेक प्रकार की व्यवस्था संचालन सम्बन्धी अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है। अतः व्यवस्था में खर्च बढ़ने पर अपेक्षाकृत अधिक ब्याज पूँजीपति द्वारा माँगी जायगी।

कुल ब्याज = वास्तविक ब्याज + जोखिम उठाने का प्रतिफल + व्यवस्था का प्रतिफल + असुविधाओं का प्रतिफल

वास्तविक ब्याज = (कुल ब्याज) - जोखिम उठाने का प्रतिफल + व्यवस्था का प्रतिफल + असुविधाओं का प्रतिफल

Scanned with CamScanner